जौहर के आख्यान से परेः चन्देरी के युद्धोत्तर समाज में स्त्रियों, पिरवार और उत्तराधिकार का इतिहास

करन[1], डॉ. सुरेश चंद्रा[2]

[1] शोधार्थी, इतिहास, विक्रांत विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश
[2] प्रोफेसर, स्कूल ऑफ सोशल साइंस एंड हिस्ट्री स्टडीज़, विक्रांत विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश

OPEN ACCESS

Volume: 5

Issue: 3

Month: September

Year: 2026

ISSN: 2583-7117

Published: 08.09.2026

Citation:

करन, डॉ. सुरेश चंद्रा "जौहर के आख्यान से परेः चन्देरी के युद्धोत्तर समाज में स्त्रियों, पिरवार और उत्तराधिकार का इतिहास" International Journal of Innovations in Science Engineering and Management, vol.5, no.3, 2026, pp. 547-556

DOI:

10.69968/ijisem.2026v5i3547-556

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Share Alike 4.0 International License

Abstract

यह शोध–पत्र 1528 ई. के चन्देरी अभियान को केवल युद्ध और जौहर की घटना के रूप में पढ़ने के बजाय उसके बाद बने सामाजिक संसार की पुनरचर्ना का प्रयास करता है। प्रचिलत आख्यान में चन्देरी प्रायः मेदिनी राय, बाबर की विजय, दुर्ग–आक्रमण और सामूहिक आत्मोत्सर्ग के नाटकीय क्षण तक सीमित हो जाता है। इस संकुचन में वे प्रश्न गौण रह जाते हैं जो युद्ध समाप्त होने के बाद आरम्भ होते हैं–कौन–से पिरवार विखंडित हुए, विधवाओं और आश्रितों की स्थिति क्या रही होगी, नाबालिग उत्तराधिकारियों तथा पार्श्व–वंशों की भूमिका कैसे बदली, ओर विजयी सत्ता द्वारा भूमि, राजस्व तथा पदों के पुनिर्वतरण ने घरेलू अथव्यवस्था को किस प्रकार प्रभावित किया। अध्ययन द्वितीयक स्रोतों पर आधारित गुणात्मक ऐतिहासिक विश्लेषण है। प्रकाशित अनुवादों, पुरातात्त्विक विवरणों, मुगल और राजपूत इतिहासलेखन, स्त्री–इतिहास, पिरवार तथा संपत्ति–अधिकार से संबंधित शोध और स्मृति–अध्ययनों को परस्पर पढ़ते हुए यह शोध श्घटनाश से श्पिरणामश की ओर दृष्टि स्थानांतिरत करता है। तर्क यह है कि जौहर की स्मृति ने स्त्री–अनुभव के एक चरम रूप को दृश्यता दी, जिबक जीवित बची स्त्रियों, घरेलू पुनगठर्न, संरक्षण–नेटवर्क, उत्तराधिकार विवाद और स्थानीय सामाजिक निरंतरताओं का इतिहास अपेक्षाकृत अदृश्य रहा। उपलब्ध स्रोत चन्देरी की प्रत्येक स्त्री या पिरवार की प्रत्यक्ष सूची नहीं देते॑ अतः लेख तथ्य, तुलनात्मक संरचनात्मक संकेत और स्मृति–परंपरा के बीच स्पष्ट भेद बनाए रखता है। इस दृष्टि से चन्देरी का युद्धोत्तर समाज विजय और पराजय की द्विआधारी कथा नहीं, बिल्क मृत्यु, विस्थापन, संपत्ति–पुनर्सयोजन, राज्य–निर्माण और पारिवारिक अनुकूलन की बहुस्तरीय प्रक्रिया के रूप में सामने आता है।

मुख्य शब्दः चन्देरी, जौहर, स्त्री इतिहास, पिरवार, उत्तराधिकार, बाबर, मेदिनी राय, युद्धोत्तर समाज, संपत्ति, स्मृति।

प्रस्तावना

युद्ध की घटना से युद्धोत्तर समाज की ओर

चन्देरी का नाम सोलहवीं शताब्दी के उत्तर भारतीय इतिहास में सामान्यतः 1528 ई. के उस संघर्ष से जुड़ता है जिसमें बाबर की सेना ने मेदिनी राय के नियंत्रण वाले दुर्ग पर अधिकार किया। राष्ट्रवादी, क्षेत्रीय और लोकप्रिय इतिहासलेखन में इस प्रसंग का सबसे प्रभावशाली प्रतीक जाहर रहा है। इससे घटना को त्याग, वीरता और पराजय की नैतिक भाषा प्राप्त हुई, किंतु उसी भाषा ने युद्ध के बाद जीवित समाज को समझने की समस्या को पीछे भी धकेला। किसी दुर्ग का पतन केवल सैन्य सत्ता–पिरवतर्न नहीं होता॑ वह पिरवारों की जनसांख्यिकीय संरचना, आश्रित संबंधों, संपत्ति पर दावों, स्थानीय संरक्षण–व्यवस्था और श्रम–संसाधनों को भी प्रभावित करता है। मध्यकालीन भारत के व्यापक राजनीतिक–सामाजिक अध्ययनों से स्पष्ट है कि राज्य और समाज के बीच संबंध राजस्व, सेवा, वंश, विवाह और स्थानीय मध्यस्थताओं के माध्यम से बनते थे॑ अतः चन्देरी की विजय को केवल रणक्षेत्र में सीमित करना विश्लेषण को अधूरा बनाता है (चन्द्र, 2005॑ एशर – टालबॉट, 2006॑ ईटन, 2019)।

इस शोध का केंद्रीय प्रश्न इसिलए श्जौहर हुआ या नहींश जैसी द्विआधारी बहस नहीं है, बिल्क यह है कि जौहर–केंद्रित स्मृति के परे युद्धोत्तर चन्देरी को किन सामाजिक श्रेणियों के माध्यम से पुनिर्नर्मित किया जा सकता है। विशेष ध्यान स्त्रियों, पिरवार और उत्तराधिकार पर रखा गया है, क्योंकि युद्ध में पुरुष योद्धा–वर्ग की बड़ी हानि होने पर घरेलू सत्ता, अभिभावकता और संसाधनों की वैधानिकता पुनर्सयोजित होती है। राजपूत समाज पर किए गए अध्ययनों ने दिखाया है कि विवाह केवल निजी संबंध नहीं था॑ वह राजनीतिक संधि, वंशीय प्रतिष्ठा आर संपत्ति–व्यवस्था का माध्यम भी था। इसी प्रकार वीरांगना और जौहर की स्मृतियाँ बाद के कालों में नए अर्थ ग्रहण करती रहीं (हूजा, 2006॑ सिंह, 2019॑ श्रीनिवासन, 2007)। चन्देरी का अध्ययन इन दोनों स्तरों–युद्धोत्तर सामाजिक पुनगठर्न और बाद की स्मृति–को एक–दूसरे से अलग रखते हुए जोड़ता है।

अध्ययन के तीन उद्देश्य हैं। पहला, 1528 के अभियान से ठीक पहले और बाद की सत्ता–संरचना को इस तरह पढ़ना कि राजस्व तथा प्रशासिनक पुनिर्वतरण के सामाजिक अर्थ स्पष्ट हों।

दूसरा, स्त्रियों और परिवार के बारे में प्रत्यक्ष प्रमाणों की कमी को स्वीकार करते हुए राजपूत और प्रारंभिक मुगल संसार के तुलनात्मक अध्ययनों से उन संरचनात्मक संभावनाओं की पहचान करना जिनमें विधवापन, आश्रय, स्त्रीधन, नाबालिग उत्तराधिकार और पार्श्व–वंशों की भूमिका समझी जा सके। तीसरा, जौहर–स्मृति की इतिहासलेखकीय शक्ति का आलोचनात्मक विश्लेषण करना, जिससे श्मृत स्त्रीश की स्मृति के साथ श्जीवित स्त्रीश और उसके सामाजिक श्रम का इतिहास भी दिखाई दे। स्मृति–अध्ययन यह सावधानी सिखाते हैं कि वीरता की परंपरा को समकालीन तथ्य के समान नहीं माना जा सकता (टालबॉट, 2016ʼ पीबॉडी, 2003)।

इस विषय की शोध–समस्या इतिहासलेखन की दृश्यता और अदृश्यता से भी जुड़ी है। युद्ध–वृत्तांत स्वभावतः सेना, नेतृत्व, घेराबंदी और विजय के निर्णायक क्षण को दर्ज करते हैं, जिबक परिवार का पुनगठर्न धीमी, बिखरी और प्रायः दस्तावेज़ों में अप्रत्यक्ष प्रक्रिया होती है। परिणामतः जिस घटना के लिए सैन्य स्रोत अपेक्षाकृत स्पष्ट हैं, उसी घटना के सामाजिक परिणामों के लिए प्रमाण असमान हैं। इस असमानता को श्प्रमाण का अभाव त्र अनुभव का अभावश मान लेना अनुचित होगा। परिवार, गृहस्थी और आश्रितिता पर प्रारंभिक मुगल तथा राजपूत अध्ययनों से पता चलता है कि राजनीतिक अधिकार घरेलू प्रतिष्ठा, सेवा–संबंध, विवाह और संसाधन–सुलभता से जुड़ा था (ओश्हैनलन, 2007ʼ लाल, 2005ʼ सिंह, 2019)। इसलिए इस लेख का शोध–अंतर इसी बिंदु पर हैः उपलब्ध युद्ध–केंद्रित स्रोतों को अस्वीकार किए बिना उनके द्वारा छोड़े गए सामाजिक मौन को इतिहास का वैध प्रश्न बनाना।

विश्लेषण में श्परिवारश को केवल जैविक या वैवाहिक इकाई नहीं, बल्कि संसाधन और संरक्षण की संस्था माना गया है। युद्ध में कमाऊ या सैन्य–संरक्षक पुरुषों की मृत्यु से संपत्ति का स्वामित्व जितना बदल सकता था, उतना ही महत्वपूर्ण ऋण, भरण–पोषण, बच्चों की अभिभावकता, मायके से सहयोग, सेवकों की पुनिर्नयुक्ति और स्थानीय मध्यस्थों से संबंध का प्रश्न था। इसी कारण उत्तराधिकार को भी केवल धार्मिक विधि के नियमों से नहीं पढ़ा गयाʼ वैधानिक अधिकार की प्रभावशीलता उस सामाजिक और राजनीतिक मान्यता पर निभर्र करती थी जो नए शासन में बदल सकती थी। संपत्ति–अधिकार के इतिहास में औपचारिक हक और वास्तविक नियंत्रण के बीच अंतर पर जो जोर दिया गया है, वह इस अध्ययन के लिए उपयोगी है (अग्रवाल, 1994ए 1998ʼ माथुर, 2007)। इस दृष्टि से युद्धोत्तर चन्देरी का घर एक छोटा सामाजिक स्थल है जहाँ राज्य–परिवतर्न, लिंग, वंश और अथव्यवस्थार् एक–दूसरे से मिलते हैं।

यह लेख किसी एक समुदाय के अनुभव को एकरूप नहीं मानता। दुर्ग के राजपूत अभिजात, सैनिक आश्रित, नगर के कारीगर और व्यापारी, धार्मिक संस्थाएँ, कृषक आबादी तथा नए मुगल प्रशासन से जुड़े अधिकारी अलग–अलग स्तरों पर युद्धोत्तर परिवतर्न से प्रभावित हुए होंगे। इसलिए श्चन्दरी समाजश को एक स्थिर इकाई के बजाय संबंधों के जाल के रूप में समझा गया है। यह दृष्टि विशेषतः स्त्री–इतिहास के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि स्त्री की स्थिति केवल श्पत्नीश या श्विधवाश की श्रेणी से नहीं, बल्कि मायके, ससुराल, बच्चों, भाई–बंद, सेवा–सम्बन्ध, संपत्ति और स्थानीय समुदाय के संयुक्त नेटवर्क से तय होती थी।

स्रोत, पद्धति और इतिहासलेखन की सीमाएँ

यह शोध मुख्यतः प्रकाशित द्वितीयक साहित्य पर आधारित गुणात्मक ऐतिहासिक अध्ययन हैʼ किसी नए सर्वेक्षण, साक्षात्कार या निजी अभिलेख–संग्रह को प्राथमिक डेटा के रूप में उपयोग नहीं किया गया है। संदर्भ के लिए बाबरनामा के प्रकाशित अंग्रेज़ी अनुवादों का उपयोग एक संपादितध्प्रकाशित पाठ के रूप में किया गया है, न कि उन्हें निष्पक्ष प्रत्यक्षदर्शी सत्य मानकर। बेविरज और थैकस्टन के अनुवाद युद्ध के क्रम, बाबर की राजनीतिक भाषा और विजय के बाद की प्रशासनिक व्यवस्था की जानकारी देते हैं, पर वे विजेता की दृष्टि से निर्मित पाठ हैं (बाबर, 1922ए 1996)। उन्नीसवीं शताब्दी के पुरातात्त्विक सर्वेक्षण चन्देरी के स्मारकीय भूगोल को दर्ज करते हैं, किंतु उनमें औपनिवेशिक वर्गीकरण की अपनी सीमाएँ हैं (किनंघम, 1871)।

पद्धति का दूसरा स्तर श्तुलनात्मक संरचनात्मक पुनिर्नर्माणश है। चन्देरी की युद्धोत्तर विधवाओं, नाबालिगों या संपत्ति–विवादों की निरंतर नामावली उपलब्ध नहीं हैʼ इसलिए राजस्थान, राजपूत कुलों और प्रारंभिक मुगल परिवार–सत्ता पर उपलब्ध शोध को संदर्भ–ढाँचे की तरह पढ़ा गया है। इसका अर्थ यह नहीं कि मेवाड़, मारवाड़ या मुगल शाही परिवार के नियम हूबहू चन्देरी में लागू थे। बल्कि इन अध्ययनों से संभावित संस्थाएँ—विवाह–संधि, स्त्रीधन, भरण–पोषण, जीवनाधिकार, अभिभावकता, जागीरध्राजस्व–अधिकार और पारिवारिक संरक्षण—पहचाने जाते हैं, जिन्हें चन्देरी की ज्ञात राजनीतिक पिरस्थिति के साथ सावधानीपूवर्क जोड़ा जाता है (लाल, 2005ʼ सिंह, 2019ʼ माथुर, 2007)।

तीसरा स्तर स्मृति और आख्यान का है। जौहर, सती और वीर–परंपराओं पर आधुनिक अध्ययन बताते हैं कि किसी ऐतिहासिक मृत्यु की कथा बाद के सामाजिक और राजनीतिक संदर्भों में पुनिर्लखी जाती है। औपिनवेशिक और राष्ट्रवादी काल में श्सम्मानश, श्बलिदानश और श्समुदायश की भाषाएँ इन प्रसंगों को नए अर्थ देती हैं (मिण, 1998ʼ श्रीनिवासन, 2007ʼ हालर्न, 1992)। इसिलए चन्देरी के स्मारक, स्थानीय परंपराएँ और लोकप्रिय कथाएँ मूल्यवान ऐतिहासिक स्रोत हैं, लेकिन वे 1528 की घटनाओं का सीधा प्रतिलेख नहीं हैंʼ वे यह बताते हैं कि बाद के समाजों ने 1528 को कैसे याद किया।

अध्ययन की काल–सीमा भी दो स्तरों पर रखी गई है। मुख्य विश्लेषण 1528 के तत्काल युद्धोत्तर संक्रमण और प्रारंभिक मुगल सत्ता–सुदृढ़ीकरण पर केंद्रित है, पर स्मृति की चर्चा जानबूझकर दीघर्कालिक है, क्योंकि स्मारक और वीर–कथाएँ घटना के बहुत बाद निर्मित अर्थों को सामने लाती हैं। इस दोहरी काल–दृष्टि से समकालीन परिणाम और पश्चातवर्ती स्मृति को मिलाने की त्रुटि कम होती है। साथ ही, अकबरकालीन राजस्व और प्रशासन पर अपेक्षाकृत समृद्ध साहित्य को 1528 पर प्रत्यक्षतः आरोपित करने के बजाय राज्य–संसाधन संबंधों की दिशा समझने के लिए उपयोग किया गया है (रिचड्र्स, 1993ʼ हबीब, 1999ʼ मूसवी, 2015)। इस प्रकार अध्ययन श्पीछे से पढ़नेश की सीमा को स्पष्ट स्वीकार करता हैः बाद के संस्थागत ढाँचों से केवल प्रश्न और तुलनात्मक संकेत लिए जाते हैं, 1528 की अनुपलब्ध घटनाओं का कृत्रिम विवरण नहीं बनाया जाता।

इस स्रोत–संकट का समाधान अनुमान को तथ्य बनाना नहीं, बल्कि प्रमाण के स्तरों को स्पष्ट करना है। इस लेख में श्बाबरनामा बताता हैश जैसे कथन प्रत्यक्ष पाठ–साक्ष्य को सूचित करते हैंʼ श्राजपूत समाज के तुलनात्मक अध्ययनों से संकेत मिलता हैश संरचनात्मक तुलना कोʼ और श्स्थानीय स्मृति मेंश स्मारकीयध्लोक–परंपरा को। इस विभाजन से विशेष रूप से स्त्री–अनुभव पर अतिरंजना से बचा जा सकता है। चन्देरी की किसी विशिष्ट अज्ञात स्त्री को विधवा, उत्तराधिकारी या बंदी घोषित करना स्रोत–विहीन होगाʼ इसके विपरीत युद्धोत्तर विधवापन और आश्रय–संकट को एक सामाजिक समस्या के रूप में पहचानना तुलनात्मक इतिहास के आधार पर वैध प्रश्न है।

उपलब्ध साहित्य की सबसे स्पष्ट कमी यह है कि चन्देरी 1528 पर सैन्य और स्मृति–केंद्रित अध्ययन तो मिलते हैं, पर परिवार, विधवापन, उत्तराधिकार और संपत्ति को एक ही विश्लेषणात्मक ढाँचे में रखने का प्रयास बहुत कम है। शर्मा, चन्द्र और हूजा जैसे इतिहासकार राजनीतिक–सैन्य अनुक्रम स्पष्ट करते हैं' हार्लन, श्रीनिवासन और मिण लैंगिक आदर्श तथा स्मृति की निर्मिति समझने में सहायता करते हैं' जिबक लाल, बालाबानिललार और मिश्र मुगल घरेलू संसार की संस्थागत जिटलताओं की ओर संकेत करते हैं। अग्रवाल, माथुर और सिंह संपत्ति, विवाह और उत्तराधिकार को दीघर्कालिक सामाजिक संरचना के रूप में पढ़ने के उपकरण देते हैं। समस्या यह है कि ये अलग–अलग साहित्यिक परंपराएँ प्रायः चन्देरी के स्तर पर परस्पर नहीं मिलतीं। इस अध्ययन का शोध–अंतर इसी संगम पर स्थित है: राजनीतिक विजय को घरेलू पुनर्रचना से जोड़कर देखना, बिना उस अनुपिस्थत प्रत्यक्ष प्रमाण को कल्पना से भरने के जिसे स्रोत उपलब्ध नहीं कराते।

इस अध्ययन की कायिपर्रकल्पना यह है कि 1528 की विजय का सबसे दीघर्कालिक प्रभाव केवल शासक के बदलने में नहीं, बिल्क उन मान्यता–व्यवस्थाओं के बदलने में था जिनके सहारे परिवार संपत्ति, पद, आश्रय और सामाजिक प्रतिष्ठा को पीढ़ियों के बीच स्थानांतिरत करते थे। इसे जाँचने के लिए तीन इकाइयाँ केंद्र में रखी गई हैं–श्घरध्परिवारश, श्संसाधनध्अधिकारश और श्संरक्षणध्राज्यश। जहाँ प्रत्यक्ष चन्देरी–साक्ष्य उपलब्ध है, वहाँ उसे प्राथिमकता दी गई है' जहाँ वह मौन है, वहाँ तुलनात्मक साहित्य केवल संभावित संरचनात्मक प्रश्न उठाने के लिए प्रयुक्त है। इसिलए श्निश्चित रूप से हुआश और श्स्रोतों की संरचना के आधार पर सम्भावित हैश के बीच भाषा–स्तर पर स्पष्ट अंतर रखा गया है। यही सावधानी युद्धोत्तर स्त्री–इतिहास को रोमानी पुनिर्नर्माण बनने से रोकती है।

तालिका 1. स्रोत–समूह, उपयोगिता और पद्धतिगत सावधानियाँ

स्रोत–समूह	मुख्य उपयोग	मुख्य सावधानी
बाबरनामा के प्रकाशित अनुवाद	युद्ध–क्रम, विजेता की भाषा, प्रशासिनक पुनगठर्न	विजेता–केंद्रित दृष्टि' संख्याओं और क्रम का आलोचनात्मक परीक्षण
अभिलेख और पुरातात्त्विक प्रतिवेदन	स्थानीय अधिकारी, दुर्ग, स्मारक तथा स्थानिक निरंतरता	लेखन–काल, संरक्षण और बाद की स्मृति को मूल घटना से अलग रखना
राजपूत–मुगल सामाजिक इतिहास	विवाह, परिवार, सेवा, संपत्ति और संरक्षण के तुलनात्मक ढाँचे	चन्देरी पर प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं' केवल तुलनात्मक विश्लेषण
स्त्री एवं स्मृति अध्ययन	जौहरध्सती, वीरता, विधवापन और स्मृति की व्याख्या	उत्तरवर्ती आदर्शों को 1528 पर यांत्रिक रूप से आरोपित न करना

चन्देरी: भू–सामिरक स्थिति, सत्ता और स्थानीय समाज

चन्देरी मालवा, बुंदेलखंड और उत्तर भारतीय मार्गों के बीच स्थित वह दुर्ग–नगर था जिसकी राजनीतिक महत्ता केवल ऊँचे किले से नहीं, बिल्क मार्ग–संयोजन और क्षेत्रीय शक्ति–संतुलन से बनती थी। स्थापत्य और ऐतिहासिक सर्वेक्षण इसे अनेक सत्ता–पिरवतर्नों से गुजरने वाला सीमांत केंद्र बताते हैं, जहाँ दिल्ली, मालवा, मेवाड़ और बाद में मुगल हित परस्पर टकराते रहे (किनंघम, 1871' बटर्न–पेज – मिशेल, 2008)। ऐसे दुर्ग–नगरों में सैन्य अभिजात और नगरीय समाज परस्पर निभर्र थे: दुर्ग को रसद, श्रम, पशु, हिथयार और बाज़ार चाहिए थे, जिबक नगर को सुरक्षा, संरक्षण, कर–व्यवस्था और मार्गों की स्थिरता। इसिलए सत्ता के पिरवतर्न की सामाजिक पिरणित दुर्ग–दीवार के भीतर और नीचे बसे आर्थिक संसार दोनों में पढ़ी जानी चाहिए।

सोलहवीं शताब्दी के आरम्भ में चन्देरी का संबंध मालवा की अस्थिर राजनीति और मेवाड़ के प्रभाव से जुड़ा था। मेदिनी राय का उदय उस व्यापक दौर का हिस्सा था जिसमें अफगान, राजपूत और स्थानीय सैनिक समूह सेवा और अवसर के आधार पर नए गठबंधन बनाते थे। कोल्फ ने श्सैन्य श्रम–बाज़ारश की अवधारणा के माध्यम से दिखाया है कि उत्तर भारत के योद्धा समूह हमेशा स्थिर जातीय–क्षेत्रीय सीमाओं में नहीं बँधे थे' वे स्वामी, वेतन, प्रतिष्ठा और संरक्षण के साथ गितशील हो सकते थे (कोल्फ, 1990)। चन्देरी के संदर्भ में यह बिंदु इसिलए महत्त्वपूर्ण है कि मेदिनी राय की पराजय से केवल एक शासक नहीं हटता, बिल्क उसके साथ जुड़े सैनिक–आश्रितों और परिवारों का संरक्षण–स्रोत भी टूटता है।

मेदिनी राय और राणा सांगा के संबंध को समझे बिना 1528 की सामाजिक पृष्ठभूमि स्पष्ट नहीं होती। मेवाड़ के विस्तार और उसकी राजपूत राजनीतिक संस्कृति ने विवाह, सेवा और सैन्य समथर्न को परस्पर जोड़ा था (शर्मा, 1962' हूजा, 2006)। पानीपत और खानवा के बाद बाबर के लिए चन्देरी पर अधिकार करना मध्य भारत की दिशा में एक सामिरक संदेश भी था: यह उन शक्तियों को नियंत्रित करने की कोशिश थी जो मेवाड़ और पूववर्ती मालवा–व्यवस्था से जुड़ी थीं। गनपाउडर युद्ध, किलेबंदी और गितशील घुड़सवार सेना पर आधुनिक अध्ययनों से यह भी समझ आता है कि प्रारंभिक मुगल विजय केवल तकनीकी श्रेष्ठता नहीं, बिल्क राजनीतिक वार्ता, दबाव और स्थानीय पुनर्सयोजन पर निभर्र थी (गोमन्स, 2002)।

चन्देरी का सामाजिक संसार बहुस्तरीय था। बाद की ख्याति चन्देरी वस्त्र–उत्पादन और व्यापार से जुड़ती है, किंतु 1528 के लिए उपलब्ध आँकड़े सीमित हैं' इसिलए वतर्मान आर्थिक विशेषताओं को सीधे उस काल पर आरोपित नहीं किया जा सकता। फिर भी मध्यकालीन दुर्ग–नगरों में कारीगर, व्यापारी, सेवक, धार्मिक विशेषज्ञ, कृषक और पिरवहन–संबंधित समूहों की उपिस्थित का व्यापक संदर्भ उपलब्ध है (एशर – टालबॉट, 2006' हबीब, 1999)। सत्ता–पिरवतर्न ने इन समूहों को समान रूप से विस्थापित किया हो, यह आवश्यक नहीं। विजेता को राजस्व और रसद के लिए स्थानीय उत्पादन की निरंतरता चाहिए थी' अतः युद्ध की हिंसा और आर्थिक निरंतरता एक साथ मौजूद रह सकती थीं।

चन्देरी की राजनीतिक संरचना को केवल 1528 की पूवर्पीठिका के रूप में देखना पर्याप्त नहीं। पीरनपुर–चन्देरी से प्रकाशित सुल्तान अहमद मालवा के अभिलेख पर एस. ए. राहिम का अध्ययन स्थानीय प्रशासिनक संसार की मिश्रित प्रकृति का संकेत देता है' अभिलेख में सत्ता की फारसी–इस्लामी अभिव्यक्ति के साथ स्थानीय राजस्व–मध्यस्थता में हिंदू अधिकारियों की उपिस्थित दिखाई देती है (राहिम, 1975)। इस प्रकार की सामग्री यह चेतावनी देती है कि युद्ध–पूर्व चन्देरी को कठोर धार्मिक खाँचों में बाँटकर नहीं पढ़ा जा सकता। राजस्व, लेखन, व्यापार, धार्मिक संस्थाएँ और सैन्य संरक्षण बहुस्तरीय संपर्क पर निभर्र थे। अतः बाबर की विजय के बाद भी सामाजिक पुनगठर्न की अधिक यथाथर्वादी पिरकल्पना श्पूर्ण प्रतिस्थापनश नहीं, बिल्क पुराने मध्यस्थों के चयनात्मक विस्थापन, कुछ की पुनिर्नयुक्ति और नए सत्ता–संबंधों में स्थानीय कौशल के पुनः उपयोग की है।

चित्र 1. चन्देरी दुर्ग का आन्तिरक प्रांगण।

स्रोतः एल. आर. बुरदक, 2005, विकिमीडिया कॉमन्स' क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन–शेयरअलाइक 3ण्0।

मूल चित्र स्रोतः
ोजजचेरूध्ध्नचसवंकणूपापउमकपंण्वतहध्ूपापचमकपंध्बवउउवदेध्4ध्46ध्बेंदक मतपऋथ्वतजणरचह

4ण 1528 का युद्धः सैन्य घटना से सामाजिक आपदा तक

4ण1 युद्ध का वृत्तांत और सैन्य प्रतिरोध

बाबरनामा के अनुसार जनवरी 1528 में बाबर चन्देरी पहुँचा और मेदिनी राय को वैकिल्पक क्षेत्र देने की पेशकश की, जिसे स्वीकार नहीं किया गया। दुर्ग पर आक्रमण के दौरान प्रतिरोध तीव्र हुआ और अंततः किले पर मुगल अधिकार स्थापित हुआ (बाबर, 1922ए 1996)। पाठ में रक्षकों द्वारा घरोंध्अंतःपुर से जुड़ी स्त्रियों की हत्या, अंतिम युद्ध और एक समूह द्वारा परस्पर मृत्यु का वणर्न मिलता है। यही प्रसंग बाद की जौहर–कथा का प्रमुख आधार बना। किंतु बेविरज के संस्करण में परवर्ती फ़ारसी इतिहासकारों की अलग–अलग संख्या और क्रम का उल्लेख है' अतः मृतकों या जौहर में सिम्मलित लोगों की निश्चित संख्या बताना स्रोतों की सीमा से आगे जाना होगा।

4ण2 हिंसा, सामाजिक विघटन और युद्ध का व्यापक प्रभाव

युद्ध को श्सामाजिक आपदाश कहने का आशय केवल मृत्यु की संख्या नहीं है। यदि सैन्य नेतृत्व और उसके आश्रति पुरुषों का एक महत्वपूर्ण भाग मारा गया या तितर–बितर हुआ, तो उसका तात्कालिक प्रभाव घरों की आय, सुरक्षा और प्रतिनिधित्व पर पड़ता है। युद्ध के बाद विधवाएँ, बच्चे, वृद्ध और सेवक अपने पुराने संरक्षण–ढाँचे से वंचित हो सकते थे। कुछ परिवार मायके या संबंधी ठिकानों की ओर जाते, कुछ नए शासक से समझौता करते, कुछ संपत्ति या सेवा–अधिकार बचाने के लिए स्थानीय मध्यस्थों पर निभर्र होते। ये प्रक्रियाएँ चन्देरी के लिए नाम–दर–नाम दर्ज नहीं हैं, पर युद्धोत्तर समाज की ऐतिहासिक समस्या के रूप में इन्हें अनदेखा करना भी उचित नहीं। परिवार और राज्य की परस्परता पर अध्ययन इस बिंदु को रेखांकित करते हैं (ओश्हैनलन, 2007' रिचड्र्स, 1993)।

विजेता के पाठ में हिंसा का प्रतीकात्मक प्रदशर्न भी महत्वपूर्ण है। बाबर विजय के बाद सिरों की मीनार बनवाने का उल्लेख करता है। ऐसी भाषा सैन्य आतंक, धार्मिक–राजनीतिक वैधता और प्रतिरोध के दमन को एक साथ व्यक्त करती है' इसे केवल निजी क्रूरता या केवल धार्मिक नीति के एकरेखीय प्रमाण की तरह पढ़ना पर्याप्त नहीं (मुखिया, 2004' ईटन, 2019)। युद्ध की साविजर्नक हिंसा से स्थानीय परिवारों के निणर्य प्रभावित हुए होंगेः पलायन, छिपी संपत्ति, संरक्षण बदलना और सामुदायिक पुनसर्मूहन ऐसे संदर्भ में समझे जा सकते हैं।

4ण3 प्रशासिनक अधिग्रहण और युद्धोत्तर संक्रमण

सबसे निर्णायक युद्धोत्तर संकेत बाबरनामा का प्रशासिनक वणर्न है। चन्देरी को अहमद शाह को सौंपने, बड़े राजस्व हिस्से को खालिसा से जोड़ने, सैनिक–राजस्व अधिकारी नियुक्त करने और एक मुगलध्हिंदुस्तानी सैन्य उपिस्थति छोड़ने का उल्लेख मिलता है (बाबर, 1922)। इससे स्पष्ट है कि विजय के तुरंत बाद राजस्व और अधिकार की नई संरचना बनाई गई। जब राजस्व–अधिकार बदलते हैं तो केवल शासकीय लेखा नहीं बदलता' स्थानीय अधिकारियों, सैनिकों, जागीरध्सेवा से जुड़ी आय, कृषक देयताओं और आश्रति परिवारों की संसाधन–श्रृंखला भी पुनिव्यवस्र्थत होती है। इसीलिए 1528 की सामाजिक परिणित को प्रशासिनक पुनगठर्न से अलग नहीं किया जा सकता।

युद्धोत्तर संक्रमण को समझने के लिए श्राजनीतिक विजयश और श्संस्थागत अधिग्रहणश को अलग–अलग क्षणों के रूप में देखना उपयोगी है। दुर्ग पर अधिकार एक दिन में हो सकता था, किंतु खेतों की उपज का आकलन, स्थानीय अधिकारियों की निष्ठा, बाजार–सुरक्षा, राहों की निगरानी और राजस्व की नियिमत वसूली दीर्घ प्रक्रिया थी। रिचड्र्स, हबीब और मूसवी के मुगल राज्य तथा अथव्यवस्र्था संबंधी अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि साम्राज्य का स्थायित्व संसाधनों की गणना और मध्यस्थों के उपयोग पर निभर्र था (रिचड्र्स, 1993' हबीब, 1999' मूसवी, 2015)। इसिलए चन्देरी में हिंसा के तुरंत बाद राज्य को उन्हीं जीवित समुदायों के साथ व्यवहार करना पड़ा जिनकी सामाजिक दुनिया युद्ध ने अस्थिर की थी। इस बिंदु पर परिवार राजनीतिक इतिहास की सूक्ष्म इकाई बन जाता है, क्योंकि कर देने वाला कृषक, सेवा करने वाला सैनिक और दावा प्रस्तुत करने वाला उत्तराधिकारी किसी न किसी घरेलू समूह का सदस्य था।

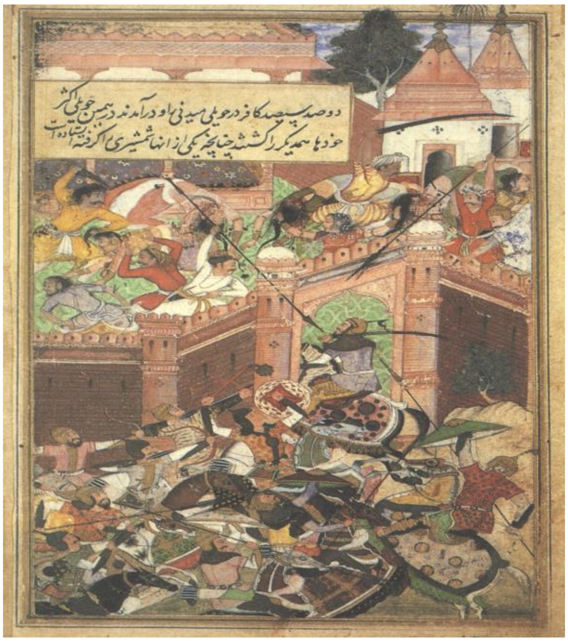

चित्र 2ण 1528 के चन्देरी–विजय का बाबरनामा लघुचित्र' चित्रकार लाश्ल एवं दुर्गा, लगभग 1590' विक्टोरिया एंड अल्बर्ट संग्रहालय, अभिग्रहण संख्या प्डण्265.1913।

IJISEM
INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIONS IN SCIENCE ENGINEERING AND MANAGEMENT

स्रोतः विक्टोरिया एंड अल्बर्ट संग्रहालय ६ विकिमीडिया कॉमन्स’ साविजर्नक डोमेन।

मूल चित्र स्रोतः
ोजजचेरूध्ध्नचसवंकण्पापउमकपंण्वतहध्पापचमकपंध्बवउउवदेध्बध्बध्1528
ऋबिंदकमतपऋवितज.संतहमण्रचह

जौहर से परेः जीवित बची स्त्रियाँ, विधवापन और आश्रय

5ण्1 जौहर आख्यान की सीमाएँ और जीवित स्त्रियों का प्रश्न

जौहर की कथा स्त्री को अक्सर एक अंतिम क्षण में स्थिर कर देती है—वह या तो वीर बलिदानी है या सामूहिक मृत्यु की सदस्य। सामाजिक इतिहास का प्रश्न इससे अलग हैः जो स्त्रियाँ जीवित रहीं, उनके सामने अगले दिन कौन—सी समस्याएँ थीं? युद्ध में पित, पिता, भाई या पुत्र की मृत्यु परिवार की आय और राजनीतिक प्रतिनिधित्व दोनों बदल सकती थी। राजपूत विवाह—राजनीति पर शोध दिखाता है कि कुलीन स्त्री विवाह के माध्यम से दो वंशीय नेटवर्को को जोड़ती थी’ विधवापन की अवस्था में वही मायका—ससुराल संबंध जीवन—रक्षा, निवास और संपत्त—दावे के संसाधन बन सकते थे (सिंह, 2019)। अतः जीवित बची स्त्री को केवल श्पराजित समुदाय की पीड़िताश नहीं, बल्कि सीमित विकल्पों के भीतर निणर्य लेने वाली सामाजिक कड़ी के रूप में देखना अधिक उपयोगी है।

विधवापन का अनुभव वर्ग और स्थिति के अनुसार भिन्न रहा होगा। अभिजात परिवार की विधवा के पास आभूषण, स्त्रीधन, रिश्तेदारी और प्रतिष्ठा जैसे संसाधन हो सकते थे, जिबक सैनिक या सेवक परिवार की स्त्री की निभरर्ता अधिक प्रत्यक्ष आर्थिक संकट में बदल सकती थी। बाद के राजपूत समाज पर नृवंशात्मक और ऐतिहासिक अध्ययन घर की वस्तुओं, दहेज, भूमि और पितृवंशीय उत्तराधिकार के बीच भेद को दिखाते हैं (सिंह, 2019’ हालर्न, 1992)। इन अध्ययनों को 1528 पर सीधा प्रमाण नहीं माना जा सकता, किंतु वे यह समझने में मदद करते हैं कि श्संपत्तश् एक ही प्रकार की चीज़ नहीं थीः आभूषण, चल संपत्त, कृषि—अधिकार, राजस्व—अनुदान और सेवा—पद अलग कानूनी तथा सामाजिक तर्को से संचालित हो सकते थे।

5ण्2 विधवापन, घरेलू संसाधन और स्त्री एजेंसी

प्रारंभिक मुगल संसार पर रूबी लाल और लिसा बालाबानिललार के अध्ययनों ने घरेलू और राजनीतिक क्षेत्रों के बीच कृत्रमि विभाजन पर प्रश्न उठाया है। शाही और उच्चवर्गीय स्त्रियाँ रिश्तेदारी, मध्यस्थता, यात्रा, संपत्त और संरक्षण में सक्रयि थीं’ उनका श्अंतःपुरश राजनीतिक निष्क्रयिता का पर्याय नहीं था (लाल, 2005’ बालाबानिललार, 2012)। चन्देरी का पराजित राजपूत समाज शाही मुगल परिवार नहीं था, पर यह तुलनात्मक बिंदु महत्वपूर्ण हैः घर और राज्य अलग—अलग जगत नहीं थे। यदि परिवार के पुरुष संरक्षक मारे गए, तो विरष्ठ स्त्रियाँ बच्चों की अभिभावकता, संपत्त की रक्षा और रिश्तेदारों से बातचीत में अधिक निर्णायक भूमिका ग्रहण कर सकती थीं।

स्त्री एजेंसी को रोमानीकरण से बचाना भी आवश्यक है। युद्धोत्तर वातावरण में बंदीकरण, यौन हिंसा, जबरन विस्थापन या आर्थिक शोषण की संभावना ऐतिहासिक रूप से वास्तिवक है, पर चन्देरी के लिए हर प्रकार की हिंसा का विशिष्ट दस्तावेजीकरण उपलब्ध नहीं। इसिलए लेख संभाव्यता और प्रमाण में भेद रखता है। मुगलकालीन मिहलाओं पर पुराने और नए दोनों अध्ययनों से यह स्पष्ट है कि स्त्री की स्थिति दरबार, कुल, धर्म, वर्ग और जीवन—चक्र से प्रभावित थी (मिश्र, 1967’ फाइंडली, 1993)। चन्देरी में भी एक ही श्स्त्री अनुभवश की कल्पना करना इसी विविधता को मिटा देगा।

5ण्3 सामाजिक प्रतिष्ठा, लैंगिक आदर्श और अनुभवों की विविधता

जौहर पर केंद्रति वीर स्मृति में स्त्री की नैतिकता प्रायः शील और आत्मोत्सर्ग से पिरभाषित होती है। हालर्न और श्रीनिवासन ने राजपूत वीर—आख्यानों की बदलती संरचना में दिखाया है कि स्त्री बिलदान और पुरुष वीरता परस्पर अर्थ निर्मित करते हैं (हालर्न, 2003’ श्रीनिवासन, 2007)। चन्देरी के मामले में इस स्मृति को नकारना उद्देश्य नहीं’ आवश्यकता यह है कि उसकी प्रभुता के कारण अदृश्य हुए जीवन—रूपों को वापस इतिहास में लाया जाए। जीवित रहना, बच्चों को बचाना, पिरवार को नए स्थान पर बसाना, संपत्त की वार्ता करना या नया संरक्षण स्वीकार करना भी ऐतिहासिक क्रयािएँ थीं, भले वे वीरगाथा की भाषा में कम आकषर्क दिखाई देती हों।

विधवापन को भी एकरूप श्रेणी मानना ऐतिहासिक रूप से भ्रामक होगा। उच्च सैन्य—राजपूत पिरवार की विधवा, कृषक पिरवार की विधवा, व्यापारी पिरवार की स्त्री और सेवा—समुदाय की स्त्री के संसाधन, संबंध और खतरे अलग हो सकते थे। हालर्न और सिंह के अध्ययन यह दिखाते हैं कि कुल, विवाह और प्रतिष्ठा की भाषा स्त्रियों की स्थिति को गहराई से प्रभावित करती थी, पर सामाजिक व्यवहार आदर्श ग्रंथों से कहीं अधिक विविध था (हालर्न, 1992’ सिंह, 2019)। चन्देरी के लिए प्रत्यक्ष जीवन—वृत्त उपलब्ध न होने के कारण इस अध्ययन ने किसी एक श्राजपूत स्त्री—अनुभवश को सावर्भौमिक नहीं माना। इसके बजाय पूछा गया है कि घर के पुरुष संरक्षक की मृत्यु, बंधकावस्था, पलायन या पदच्युति ने किस स्त्री को किस प्रकार की आर्थिक जिम्मेदारी या असुरक्षा में रखा होगा। यह प्रश्न स्त्री को केवल सम्मान की प्रतीकात्मक वाहिका से हटाकर जीवित घरेलू अथव्यवस्र्था की कर्ता बनाता है।

पिरवार, आश्रति, बालक और विस्थापन

युद्धोत्तर पिरवार को केवल जैविक इकाई नहीं, बल्कि उत्पादन, उपभोग, उत्तराधिकार और संरक्षण की संस्था के रूप में देखना चाहिए। सैनिक—अभिजात पिरवारों की आय सेवा, भूमि—अधिकार या शासक से प्राप्त अनुदान से जुड़ी हो सकती थी’ नगर पिरवारों की आय व्यापार, दस्तकारी और सेवाओं से। जब राजनीतिक संरक्षक बदलता है, इन आय—स्रोतों का जोखिम भी बदलता है। प्रारंभिक मुगल राज्य में घर, पद और सेवा के संबंध पर ओश्हैनलन का अध्ययन बताता है कि पुरुष सेवा—परंपरा स्वयं घरेलू प्रतिष्ठा और वंशीय पुनरुत्पादन से गुँथी थी (ओश्हैनलन, 2007)। चन्देरी की हार ने मेदिनी राय के अनुयायी पिरवारों में इसी सेवा—आधारित निरंतरता को बाधित किया होगा।

नाबालिग उत्तराधिकारी युद्धोत्तर संकट की एक महत्वपूर्ण श्रेणी हैं। पिता की मृत्यु के बाद संपत्त पर बच्चे का दावा केवल आयु का प्रश्न नहीं था’ उसे अभिभावक, कुल, राज्य की मान्यता और स्थानीय लेखकीयध्राजस्व संरचना की आवश्यकता होती थी। हिंदू विधि—परंपराओं की मध्यकालीन व्याख्याएँ संयुक्त पिरवार, पुत्र, विधवा, पुत्री और अलग संपत्त के जिटल संबंधों को दर्ज करती हैं (माथुर, 2007)। व्यवहार में प्रादेशिक प्रथा और राजनीतिक शक्त निर्णायक हो सकती थी। यदि राज्य ने पुराने सेवा—अधिकार समाप्त किए, तो केवल वैधानिक वारिस होना पर्याप्त नहीं’ उसे नई सत्ता से मान्यता भी चाहिए थी।

विस्थापन हर पिरवार के लिए स्थायी पलायन नहीं होता। कुछ लोग निकटवर्ती ग्रामों, रिश्तेदार ठिकानों या धार्मिक संस्थाओं के पास अस्थायी आश्रय लेते होंगे’ पिरस्थितियाँ स्थिर होने पर लौटना भी संभव था। पिरवार—रणनीति में मिहलाओं के मायके का महत्व इस संदर्भ में बढ़ जाता है। व्यापक दक्षणि एशियाई भूमि—अधिकार साहित्य में अग्रवाल ने दिखाया है कि स्त्री की भौतिक सुरक्षा में भूमि और

स्वतंत्र संसाधन निर्णायक होते हैं, और विधवा तथा पुत्री के अधिकारों का टकराव घरेलू सत्ता को आकार देता है (अग्रवाल, 1994ए 1998)। यद्यपि ये अध्ययन आधुनिक ग्रामीण भारत पर केंद्रति हैं, वे ऐतिहासिक विश्लेषण के लिए एक उपयोगी प्रश्न देते हैंः युद्धोत्तर स्त्री के पास वास्तव में कौन–सा संसाधन उसके अपने नियंत्रण में था?

परिवार का पुनगठर्न पार्श्व–वंशों को भी सक्रयि करता है। भाई, चाचा, देवर, मातुल और विवाह–संबंधी रिश्तेदार अनाथ बच्चों या विधवाओं के संरक्षण का दावा कर सकते थे' यही संरक्षण संपत्ति पर नियंत्रण का माध्यम भी बन सकता था। इसलिए श्सहायताश और श्अधिग्रहणश का हमेशा अलग नहीं किया जा सकता। राजपूत विवाह और उत्तराधिकार पर उपलब्ध अध्ययन संकेत देते हैं कि कुल की प्रतिष्ठा बनाए रखने की चिंता स्त्री की गितशीलता और पुनिर्ववाह जैसे प्रश्नों को भी प्रभावित करती थी (सिंह, 2019)। अलग जातिध्समुदाय समूहों में नियम भिन्न हो सकते थे' इसीलिए चन्देरी के पूरे समाज पर एक राजपूत कुलीन मानक आरोपित करना अनुचित होगा।

विस्थापन के इतिहास में सेवक और आश्रति परिवार भी महत्वपूर्ण हैं। दरबारी घरों के साथ दास, दासियाँ, परिचारक, सैनिक, पुजारी, लेखक और कारीगर जुड़े हो सकते थे। उच्चवर्गीय परिवार का विघटन इन आश्रतिों को नए रोजगार और संरक्षण की खोज में धकेलता है। मुगल घरेलू संसार पर शोध से ज्ञात होता है कि श्परिवारश के भीतर जैविक रिश्तेदारों से परे बड़ी सेवा–जनसंख्या भी शामिल थी (लाल, 2005)। चन्देरी के युद्धोत्तर पुनगठर्न को समझते हुए यह व्यापक घरेलू इकाई ध्यान में रखनी चाहिए।

परिवार को केवल रक्त–संबंधों की स्थिर इकाई के रूप में नहीं, बल्कि अधिकार–सुरक्षा की एक श्कॉरपोरेटश रणनीति के रूप में भी देखना चाहिए। संकट में दूर के कुटुम्ब, वैवाहिक संबंध, गुरु–शिष्य या संरक्षक–सेवक संबंध संपत्ति और बच्चों की रक्षा के वैकिल्पक माध्यम बन सकते थे। सैन्य श्रम और सेवा पर कोल्फ का अध्ययन दर्शाता है कि उत्तर भारतीय राजनीतिक संसार में गितशील सेवा–समूहों की पहचान और आजीविका पारिवारिक तथा सैनिक नेटवर्क से जुड़ी थी (कोल्फ, 1990)। अतः युद्धोत्तर चन्देरी में श्परिवार टूट गयाश और श्परिवार समाप्त हो गयाश समान कथन नहीं हैं। घर का भौतिक विनाश रिश्तों के पुनर्सयोजन को जन्म दे सकता था–अनाथ का किसी रिश्तेदार के साथ जाना, विधवा का मायके या ससुराल की दूसरी शाखा में आश्रय लेना, अथवा पुरुष सदस्य का नए सैन्य संरक्षक से सेवा–संबंध बनाना।

उत्तराधिकार, स्त्रीधन और संपत्ति–अधिकार का कानूनी–सामाजिक ढाँचा

7ण्1 संपत्ति के प्रकार, स्त्रीधन और उत्तराधिकार की बहुलता

उत्तराधिकार का इतिहास केवल धमर्शास्त्रीय नियमों का इतिहास नहीं है। मध्यकालीन उत्तर भारत में संपत्ति कई रूपों में मौजूद थी–वंशीयध्संयुक्त संपत्ति, व्यक्तगित चल संपत्ति, स्त्रीधन, सेवा के बदले प्राप्त अधिकार, राजस्व–अनुदान और स्थानीय पद से जुड़ी आय। माथुर द्वारा संपादित मध्यकालीन हिंदू विधि–अध्ययन दिखाते हैं कि पत्नी, विधवा और पुत्री के अधिकारों पर न्यायशास्त्रीय मत एकरेखीय नहीं थे' उत्तराधिकार और भरण–पोषण की श्रेणियाँ अलग हो सकती थीं (माथुर, 2007)। इसका अर्थ है कि युद्ध में पुरुष वारिस की मृत्यु के बाद श्संपत्ति स्वतः किसे मिलीश जैसा सरल प्रश्न पर्याप्त नहीं। पहले यह पहचानना होगा कि संबंधित संपत्ति किस प्रकार की थी और उस पर राज्य की मान्यता कितनी आवश्यक थी।

स्त्रीधन इस संदर्भ में विशेष महत्व रखता है। विवाह के अवसर पर प्राप्त आभूषण, वस्तुएँ या अन्य चल संसाधन स्त्री की आर्थिक सुरक्षा का अपेक्षाकृत स्वतंत्र आधार बन सकते थे, हालाँकि परिवार के भीतर उनके वास्तिवक नियंत्रण में भिन्नता संभव थी। राजपूत विवाह–राजनीति पर सिंह का अध्ययन उच्चवर्गीय स्त्रियों के विवाह, विधवापन और संपत्ति–अधिकार को राजनीतिक संबंधों के साथ रखता है (सिंह, 2019)। चन्देरी की पराजय में जब घरों पर तत्काल संकट आया होगा, चल संपत्ति का संरक्षण, छिपाना, स्थानांतरण या लूट एक महत्वपूर्ण लेकिन स्रोतों में कम दिखने वाला आयाम रहा होगा।

7ण्2 भूमि, सेवा–अधिकार और राज्य की मान्यता

कृषि भूमि अथवा राजस्व–अधिकार की स्थिति अलग थी। राज्य–सत्ता से संबद्ध अनुदान और सेवा–पद सामान्य निजी वस्तु की तरह उत्तराधिकार में स्थायी रूप से नहीं चलते' नई सत्ता उनकी पुष्टि, पिरवतर्न या जब्ती कर सकती थी। इसिलए मेदिनी राय से जुड़े परिवारों के लिए 1528 का मुख्य संकट वैधानिक उत्तराधिकारी की अनुपिस्थति भर नहीं, बल्कि उस राजनीतिक प्राधिकार का बदलना था जो पुराने अधिकार को वैधता देता था। मुगल राज्य के इतिहास में ज़मींदार, जागीर, खालिसा और स्थानीय मध्यस्थताओं के पिरवतर्न पर बल दिया गया है (रिचड्र्स, 1993' हबीब, 1999)। चन्देरी की विजय इसी प्रकार की राजकीय पुनिपर्रभाषा का प्रारंभिक उदाहरण मानी जा सकती है।

यहाँ हिंदू और इस्लामी उत्तराधिकार सिद्धांतों को यांत्रकि रूप से आमने–सामने रखना भी भ्रामक होगा। चन्देरी का समाज धार्मिक रूप से बहुविध था और व्यवहारिक संपत्ति संबंध स्थानीय प्रथा, परिवार और राज्य के स्तर पर तय होते थे। नए मुगल अधिकारियों से जुड़े मुस्लिम परिवारों में कुरआनी उत्तराधिकार हिस्सों का सिद्धांत मौजूद था, जिसमें स्त्रियों को निश्चित हिस्से मिलते थे' किंतु सेवा–जागीर या पद का हस्तांतरण फिर भी राज्य–स्वीकृति से नियंत्रति हो सकता था। प्रारंभिक मुगल परिवार और दरबार के अध्ययनों में मिहलाओं की संपत्ति, संरक्षण और मध्यस्थता के अनेक रूप दिखाई देते हैं (बालाबानिललार, 2012' मिश्र, 1967)।

7ण्3 संरक्षकता, विधिक मानक और व्यवहारिक अधिकार

उत्तराधिकार की वास्तिवक राजनीति अक्सर संरक्षकता की राजनीति थी। नाबालिग की संपत्ति का प्रबंधन करने वाला अभिभावक उसके भिवष्य पर प्रभाव रखता था' विधवा के भरण–पोषण का उत्तरदायित्व लेने वाला रिश्तेदार उसकी गितशीलता और संसाधन–प्रयोग को भी नियंत्रति कर सकता था। आधुनिक भूमि–अधिकार विश्लेषण इस संबंध को स्पष्ट करता है कि कानूनी हक और प्रभावी नियंत्रण अलग चीज़ें हैं (अग्रवाल, 1994)। चन्देरी के युद्धोत्तर परिवारों की व्याख्या में इसलिए श्अधिकारश के साथ श्कब्जाश, श्मान्यताश, श्उपयोगश और श्संरक्षणश चार अलग प्रश्न होने चाहिए।

यहाँ विधिक मानक और सामाजिक व्यवहार के बीच अंतर केंद्रीय है। स्मृति–परंपराएँ और धमर्शास्त्रीय व्याख्याएँ स्त्रीधन, उत्तराधिकार और संरक्षकता के लिए नियम प्रस्तुत करती थीं, किंतु किसी विशिष्ट परिवार में अधिकार का वास्तिवक प्रयोग संपत्ति के प्रकार, उत्तराधिकारी की आयु, स्थानीय प्रथा, जाति–स्थिति और राजनीतिक शक्ति से प्रभावित होता था। माथुर द्वारा संपादित मध्यकालीन हिंदू विधि का अध्ययन इस पिरवतनर्शीलता को समझने में उपयोगी है (माथुर, 2007)। अग्रवाल के आधुनिक दक्षिण एशियाई भूमि–अधिकार विश्लेषण को यहाँ प्रत्यक्ष सोलहवीं सदी का प्रमाण नहीं, बल्कि एक विश्लेषणात्मक चेतावनी की तरह लिया गया हैः कागजीध्मान्य अधिकार, नियंत्रण, आय पर पहुँच और संपत्ति हस्तांतिरत करने की क्षमता चार अलग बातें हो सकती हैं

(अग्रवाल, 1994ए 1998)। चन्देरी के युद्धोत्तर इतिहास में इसी अंतर को पहचानना आवश्यक है।

विजय के बाद भूमि, राजस्व और पद का पुनिर्वतरणः घरेलू अथव्यवस्था पर प्रभाव

बाबरनामा में विजय के बाद चन्देरी की आय–व्यवस्था के पुनर्सयोजन का संक्षप्ति लेकिन महत्वपूर्ण संकेत मिलता है। अहमद शाह को सत्ता देना, कुछ राजस्व को खालिसा में रखना और सैन्य–राजस्व प्रशासन के लिए अधिकारी तथा सैनिक छोड़ना दर्शाता है कि मुगल राज्य ने स्थानीय ससाधन–प्रवाह को तत्काल अपने नियंत्रण में लेने की कोशिश की (बाबर, 1922)। श्खालिसाश का अर्थ केवल कर का नया नाम नहीं' यह इस बात का संकेत है कि राजस्व का लाभार्थी और संग्रह का अधिकार बदल रहा था। यिद पुराने सरदारों की आय सैन्य सेवा और स्थानीय राजस्व से जुड़ी थी, तो उनके पिरवार की घरेलू अथव्यवस्था पर इसका सीधा प्रभाव पड़ना स्वामाविक था।

मुगल कृषि और राजस्व–व्यवस्था पर हबीब का विश्लेषण राज्य, ज़मींदार और कृषक के बहुस्तरीय संबंध को रेखांकित करता है, जिबक मूसवी ने अकबरकालीन अथव्यवस्था के सांख्यिकीय ढाँचे के माध्यम से राजस्व और उत्पादन की व्यापक संरचना को समझाया है (हबीब, 1999' मूसवी, 2015)। यद्यपि 1528 का चन्देरी अकबरकालीन मानकीकृत व्यवस्था से पहले का है, इन अध्ययनों से एक महत्वपूर्ण सावधानी मिलती हैः भूमि पर श्मालिकानाश और राजस्व–संग्रह का अधिकार एक ही चीज़ नहीं था। इसिलए युद्धोत्तर पिरवार की क्षति को भूमि–जब्ती के सरल सूत्र में नहीं, बिल्क आय और अधिकार की विभिन्न परतों में पढ़ना चाहिए।

राज्य–निर्माण पर आलम और सुब्रह्मण्यम द्वारा संपादित अध्ययनों ने मुगल सत्ता को एक कठोर ऊपर–से–नीचे प्रणाली के बजाय बातचीत, स्थानीय अभिजातों और सेवा–समूहों पर निर्भर संरचना के रूप में देखने पर बल दिया है (आलम – सुब्रह्मण्यम, 2000)। चन्देरी में भी नई सत्ता को स्थानीय लेखकों, महसूल–किर्मयों, मार्ग–ज्ञान और कृषक उत्पादन की आवश्यकता रही होगी। इसका सामाजिक अर्थ यह है कि पराजित व्यवस्था के सभी कर्मी एक साथ निष्कासित नहीं हुए होंगे। कुछ पुराने मध्यस्थ नए प्रशासन में समाहित किए जा सकते थ' ऐसी समावेशन प्रक्रिया पिरवारों को जीवित रहने का नया मार्ग देती, किंतु निष्ठा और प्रतिष्ठा की पुरानी संरचनाओं को बदल देती।

सेवा और घरेलू प्रतिष्ठा के संबंध को समझने में मुगल राजनीतिक संस्कृति पर ओश्हैनलन और मुखिया के अध्ययन उपयोगी हैं। राज्य सेवा केवल वेतन का स्रोत नहीं, पुरुषत्व, वंश और पिरवार की प्रतिष्ठा का साधन भी बनती थी (ओश्हैनलन, 2007' मुखिया, 2004)। इसिलए मेदिनी राय के अनुयायियों के लिए नए शासक की सेवा ग्रहण करना आर्थिक पुनर्वास और राजनीतिक पहचान के बीच किठन समझौता रहा होगा। कुछ पिरवार इस मार्ग को चुनते, कुछ मेवाड़ अथवा अन्य क्षेत्रीय सत्ता की ओर जाते और कुछ स्थानीय गैर–सैन्य आय की ओर मुड़त–ये संभावनाएँ सैन्य श्रम की गितशीलता पर कोल्फ के विश्लेषण से संगत हैं (कोल्फ, 1990)।

घरेलू अथव्यवस्था पर कर–व्यवस्था का प्रभाव वर्गानुसार अलग था। सैनिक–राजपूत घर को सेवा–अधिकार की हानि मुख्य संकट लग सकती थी' किसान पिरवार के लिए नई वसूली, अस्थिरता या फसल की क्षति' व्यापारी के लिए मार्ग–सुरक्षा और बाजार का पुनर्संचालन' कारीगर के लिए संरक्षण और मांग का पिरवतर्न। युद्ध के बाद राज्य की राजस्व–रुचि स्वयं आर्थिक पुनस्थापना का दबाव पैदा करती है–विजेता को निजर्न नगर से आय नहीं मिल सकती। इसिलए हिंसा के बाद का पुनिर्नर्माण राज्य और स्थानीय समाज की अनिवार्य परस्परता से संचालित हुआ होगा।

घरेलू अथव्यवस्था पर युद्ध का प्रभाव समझने के लिए श्स्वामित्वश और श्आय पर पहुँचश को अलग करना विशेष उपयोगी है। कोई पिरवार भूमि का औपचारिक स्वामी न होकर भी उससे जुड़ी सेवा, लगान–अंश, मजदूरी, व्यापारिक सुविधा या संरक्षण–भत्ते पर निर्भर हो सकता था। सत्ता पिरवतर्न में ऐसे आय–स्रोत भूमि के वास्तिवक हस्तांतरण से पहले ही बाधित हो सकते थे। हबीब और मूसवी के राजस्व संबंधी अध्ययनों से स्पष्ट है कि कृषि अधिशेष की प्राप्ति अनेक मध्यस्थ स्तरों से होकर होती थी (हबीब, 1999' मूसवी, 2015)। इसिलए किसी सैनिक या स्थानीय पदाधिकारी की मृत्यु का प्रभाव उसकी विधवा पर केवल खेत श्मिलने या न मिलनेश का प्रश्न नहीं था' प्रश्न यह भी था कि वेतन, अनुदान, राजस्व–अंश, उधार–संबंध और संरक्षकता में से कौन–सा स्रोत बना रहा। यह व्यापक आर्थिक पिरभाषा स्त्री और आश्रितों की वास्तिवक असुरक्षा को अधिक सटीक ढंग से पकड़ती है।

पेशागत–सामुदायिक पुनगठर्न, श्रम और स्थानीय अथव्यवस्था

चन्देरी के युद्धोत्तर इतिहास को केवल राजपूत अभिजात पिरवारों तक सीमित करने पर नगर का बड़ा हिस्सा गायब हो जाता है। किले से जुड़े शिल्पकार, निर्माण–कर्मी, हिथयार निर्माता, व्यापारी, पशु–पालक, पिरवहनकर्ता, लेखक, धार्मिक सेवक और कृषक समूह सत्ता से अलग–अलग दूरी पर स्थित थे। मध्यकालीन भारतीय नगरों की अथव्यवस्था पर व्यापक अध्ययनों से ज्ञात होता है कि राजनीतिक हिंसा के बावजूद बाजार और शिल्प की निरंतरता अक्सर राज्य की आवश्यकता बनी रहती थी (हबीब, 1999' एशर – टालबॉट, 2006)। चन्देरी जैसे मार्ग–संबद्ध केंद्र को नियंत्रित करने का लाभ तभी था जब उसका राजस्व और आर्थिक जीवन पुनः चल सके।

इसिलए 1528 के बाद श्पूर्ण विनाशश का मॉडल सावधानी से देखना चाहिए। दुर्ग पर हिंसक कब्जा और नेतृत्व–वर्ग की क्षति वास्तिवक हो सकती है, पर पूरे नगर–समाज का एक समान अंत नहीं मान लेना चाहिए। स्थापत्य की दीघर्कालिक परतें बताती हैं कि चन्देरी बाद के दशकों और शताब्दियों में भी सक्रयि रहा' यह राजनीतिक स्वामित्व बदलने के बावजूद स्थान की सामाजिक उपयोगिता का संकेत है (बटर्न–पेज – मिशेल, 2008' एशर, 1992)। भवनों का पुनःउपयोग, धार्मिक संरचनाओं का संरक्षणधपिरवतर्न और बाजार का संचालन सत्ता–पिरवतर्न की रोज़मर्रा प्रक्रयि थे।

कारीगर और व्यापारी पिरवारों के लिए संरक्षण का बदलाव अवसर और जोखिम दोनों ला सकता था। नया सैन्य दल उपभोग और आपूर्ति की मांग पैदा करता, किंतु युद्ध के दौरान पूँजी, स्टॉक या उपकरण की क्षति भी संभव थी। मुगल अथव्यवस्था पर मूसवी का कार्य नगरीय उत्पादन और राज्य की मांग के बीच संबंध को रेखांकित करता है (मूसवी, 2015)। यद्यपि चन्देरी के 1528 के शिल्प–आँकड़े उपलब्ध नहीं, इस व्यापक संदर्भ से यह प्रश्न उठता है कि किस प्रकार स्थानीय पेशागत समूह नए अधिकारियों से कर, आपूर्ति और सुरक्षा पर बातचीत करते होंगे।

सामुदायिक पुनगठर्न का अर्थ धार्मिक समुदायों की सरल अदला–बदली भी नहीं है। मध्यकालीन भारत में राजनीतिक सत्ता और सांस्कृतिक संपर्क के संबंध अनेक स्तरों पर कार्य करते थे' विजेता की धार्मिक भाषा के बावजूद प्रशासन और बाजार में व्यवहारिक सहयोग

आवश्यक था (ईटन, 2019' एशर – टालबॉट, 2006)। इसिलए चन्देरी के युद्ध को श्एक समुदाय गया, दूसरा आयाश जैसी आधुनिक जनसांख्यिकीय भाषा में बदलना स्रोत–संगत नहीं। अधिक संभावित पिरदृश्य सैन्य नेतृत्व और राजस्व–अधिकार में तेज बदलाव, उसके साथ कुछ जन–गितशीलता, और बड़े स्थानीय सामाजिक आधार की क्रमिक अनुकूलन प्रक्रिया है।

स्थानीय साहित्यिक और भाषिक संस्कृति भी सामाजिक निरंतरता का संकेतक हो सकती है। मुगल काल की ब्रजभाषा और दरबारी साहित्य पर बुश का अध्ययन दिखाता है कि राजनीतिक सीमाओं के पार साहित्यिक नेटवर्क और संरक्षण संरचनाएँ संचिरत होती थीं (बुश, 2011)। चन्देरी और निकटवर्ती बुंदेलखंड–मालवा क्षेत्र में आगे चलकर विकिसत सांस्कृतिक संसार को 1528 की एकल घटना से काटकर नहीं देखा जा सकता। युद्धोत्तर समाज की पुनरचर्ना इसी दीघर्कालिकता को सामने लाती हैः समुदाय टूटते भी हैं, लेकिन नई पिरस्थितियों में पुराने कौशल, रिश्ते और सांस्कृतिक पूँजी पुनः व्यिवस्थत भी होते हैं।

चन्देरी की बाद की प्रसिद्ध वस्त्र–परंपरा को सीधे 1528 की अथव्यवस्र्था पर आरोपित करना भी पद्धतिगत त्रुटि होगी। वतर्मान या उत्तरवर्ती शिल्प–विशेषज्ञता से यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि वही उत्पादन–संरचना युद्ध के समय उसी रूप में मौजूद थी। फिर भी नगर की दीघर्कालिक शहरी उपयोगिता, मार्ग–संपर्क और शिल्प–व्यापार की संभावनाएँ यह समझने में सहायता करती हैं कि विजेता के लिए जनजीवन की पूर्ण समाप्ति आर्थिक रूप से अव्यावहारिक थी। एशर एवं टालबॉट तथा ईटन जैसे इतिहासकार मध्यकालीन भारतीय नगरों और राजनीतिक संरचनाओं में सांस्कृतिक–सामाजिक निरंतरता तथा अनुकूलन के अनेक उदाहरण देते हैं (एशर एवं टालबॉट, 2006' ईटन, 2019)। अतः चन्देरी के मामले में सावधान निष्कर्ष यह है कि युद्ध ने स्थानीय श्रम–संरचना को झटका दिया, लेकिन राज्य और बाजार दोनों ने कुछ कौशल तथा नेटवर्कों को पुनः कायर्शील बनाने की आवश्यकता पैदा की।

स्मृति, स्मारक और जौहर–केंद्रित इतिहासलेखन की आलोचना

10०1 साविजर्नक स्मृति में जौहर का प्रभुत्व

चन्देरी की साविजर्नक स्मृति में जौहर का स्थान अत्यंत शक्तशिाली है। स्मारक, पयटर्न–वणर्न और लोकप्रिय कथा उस दिन की त्रासदी को एक दृश्य प्रतीक में बदल देते हैं। स्मृति का यह रूप ऐतिहासिक रूप से महत्त्वहीन नहीं' वह बताता है कि बाद के समाज किन अनुभवों को समुदाय की पहचान के केंद्र में रखते हैं। किंतु श्रीनिवासन ने पिद्मनी आख्यान के दीर्घ इतिहास में दिखाया है कि राजपूत वीरता की कथाएँ विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक संदर्भों में पुनर्सयोजित होती रहीं (श्रीनिवासन, 2007)। इसी तरह टालबॉट ने पृथ्वीराज स्मृति की परतों को पढ़ते हुए दिखाया कि श्ऐतिहासिक नायकश का अर्थ समय के साथ बदलता है (टालबॉट, 2016)। चन्देरी की जौहर–स्मृति को भी एक दीर्घ स्मृति–इतिहास की तरह पढ़ना चाहिए।

इस आलोचना का उद्देश्य जौहर के दुःख या स्थानीय सम्मानबोध का उपहास नहीं है। प्रश्न यह है कि स्मारक किसे दृश्य बनाता है और किसे अदृश्य। सामूहिक मृत्यु की कथा में बची हुई विधवा, अनाथ, विस्थापित सेवक, संपत्त्ति पर दावा करती पुत्री, नए शासक से समझौता करता कारीगर या लौटता कृषक नहीं दिखता। स्त्री–इतिहासलेखन ने बार–बार यह दिखाया है कि राष्ट्रीयध्सामुदायिक परंपराएँ स्त्री–देह को सम्मान और पहचान का प्रतीक बना सकती हैं, जिबक स्त्री की दैनिक भौतिक पिरिस्थितियाँ पीछे चली जाती हैं (मिण, 1998' श्रीनिवासन, 2007)। चन्देरी पर श्जौहर से परेश दृष्टि इसी दृश्यता–अदृश्यता को प्रश्न बनाती है।

10०2 वीरता, लैंगिक आदर्श और स्मारक–राजनीति

हालर्न के राजपूत स्त्री और वीर–पूजा संबंधी अध्ययन विशेष सावधानी देते हैं। आधुनिक राजपूत कथाओं में पत्नी, कुलदेवी, सती और वीर पुरुष की भूमिकाएँ नैतिक पारिस्परकता में निर्मित होती हैं' वे सामाजिक आदर्श की भाषा हैं (हालर्न, 1992ए 2003)। इन्हें 1528 की स्त्रियों की वास्तिवक इच्छा या व्यवहार का प्रत्यक्ष दस्तावेज नहीं माना जा सकता। इसी कारण चन्देरी की स्थानीय परंपरा में यदि विशिष्ट रानियों या जौहर–संख्या के नाम मिलते हैं, तो उनका काल, स्रोत और प्रसार अलग से जाँचना चाहिए। समकालीन बाबरनामा में जो दर्ज है और आधुनिक स्मारक जो कहता है, दोनों को जोड़ना चाहिए पर मिलाना नहीं।

1932 में स्थापित जौहर स्मारक जैसी स्मारकीय वस्तुएँ बीसवीं शताब्दी की स्मृति–राजनीति का भी हिस्सा हैं। यह तथ्य स्वयं महत्त्वपूर्ण हैः चार शताब्दियों बाद किसी घटना को पत्थर पर लिखना उस समय की साविजर्नक इतिहास–बोध और वीरता की कल्पना को दर्शाता है। पीबॉडी ने राजस्थान में इतिहास–चेतना और राजनीतिक व्यवस्था के संबंध की पड़ताल की है' स्मृति केवल अतीत का भंडार नहीं, वतर्मान सामाजिक व्यवहार को वैधता देने वाली संरचना भी है (पीबॉडी, 2003)। इसिलए स्मारक का अध्ययन 1528 की घटना के साथ–साथ 1932 और उसके बाद की स्मृति का अध्ययन भी है।

10०3 दृश्य संस्कृति, पुरातात्त्विक स्मृति और इतिहासलेखन

दृश्य संस्कृति भी इस स्मृति का हिस्सा है। लगभग 1590 के बाबरनामा लघुचित्र में चन्देरी की विजय को मुगल दरबारी दृश्य–भाषा में चित्रित किया गया' यह घटना से छह दशकों बाद बना शाही प्रतिनिधित्व है, न कि युद्ध–स्थल का फोटोग्राफ। मुगल कला और स्थापत्य पर अध्ययन बताते हैं कि चित्र और भवन राजनीतिक अधिकार को दृश्य रूप में गढ़ते थे (एशर, 1992' बुश, 2011)। एक ओर मुगल लघुचित्र विजय को साम्राज्य की उपिलब्ध बनाता है, दूसरी ओर आधुनिक जौहर स्मारक पराजितों के बिलदान को सामुदायिक स्मृति बनाता है। इन दोनों दृश्य स्रोतों के बीच जीवित युद्धोत्तर पिरवारों का इतिहास लिखना इस शोध की मुख्य इतिहासलेखकीय चुनौती है।

चन्देरी का जौहर स्मारक स्वयं स्मृति के कालक्रम को दृश्यमान करता है। ग्वालियर राज्य के पुरातत्व विभाग की बीसवीं सदी के प्रारम्भिक प्रतिवेदन–परंपरा में चन्देरी के जौहर स्थल और स्मारकीय संरक्षण का उल्लेख मिलता है' इससे स्पष्ट है कि 1528 की घटना को आधुनिक पुरातात्त्विक–राजकीय भाषा में पुनःस्थापित करने की प्रक्रिया बहुत बाद की है (ग्वालियर राज्य पुरातत्व विभाग, 1932)। इसिलए आज दिखाई देने वाला स्मारक श्घटना का तटस्थ अवशेषश नहीं, बिल्क स्मरण का बाद का माध्यम भी है। दूसरी ओर लगभग 1590 का बाबरनामा लघुचित्र मुगल दरबार की विजय–दृष्टि से घटना को दृश्य बनाता है। इन दोनों के बीच लगभग साढ़े तीन शताब्दियों का अंतर है और दोनों की राजनीतिक दशर्क–समुदाय अलग है। इन्हें साथ पढ़ने पर यह स्पष्ट होता है कि चन्देरी की स्मृति एक नहीं, प्रतिस्पर्धी दृश्य

व्यवस्थाओं से बनी है—शाही विजय, राजपूत बलिदान और स्थानीय पयटर्न—स्मृति।

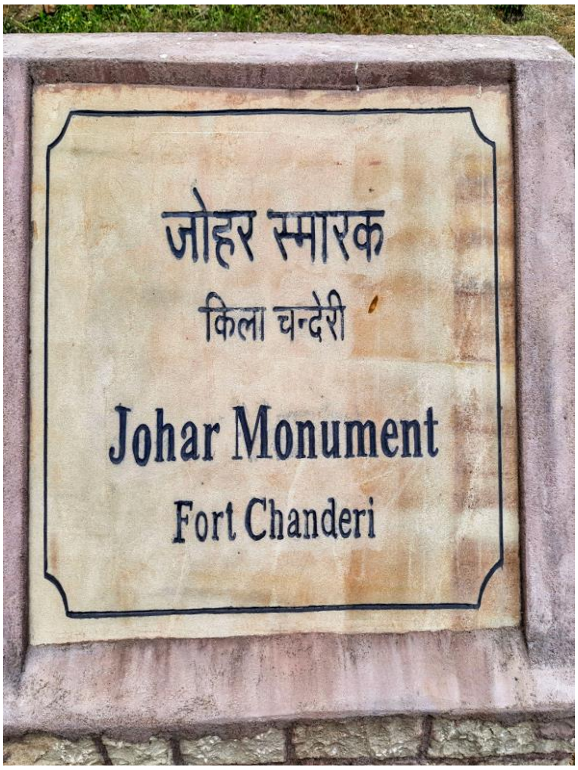

चित्र 3. चन्देरी दुर्ग स्थित जौहर स्मारक।

स्रोतः सारा वेल्व, 2021, विकिमीडिया कॉमन्स' सीसी0 1ण0 साविजर्नक डोमेन समपर्ण।

मूल चित्र स्रोतः
ीजजचेरूध्ध्नचसवंकणूापाउमकपंण्वतहध्ूापचमकपंध्बवउउवदेध्5ध्5कध0112 021ऋश्रवींतत्रऋडमउवतपंसः2ब्रूबिंदकमतपः2ब्रूडंकीलंऋच्तांकमीत्र001ण रचह

निष्कर्षः चन्देरी के इतिहास में पिरवार, उत्तराधिकार और जीवित समाज की पुनर्स्थापना

चन्देरी 1528 को जौहर के आख्यान से परे पढ़ने पर युद्ध की ऐतिहासिक इकाई बदल जाती है। घटना अब दुर्ग—आक्रमण और सामूहिक मृत्यु पर समाप्त नहीं होती' वह सत्ता, परिवार और संसाधन के दीर्घ संक्रमण में बदलती है। बाबरनामा का युद्ध—वणर्न और विजय के बाद प्रशासिनक पुनव्यवस्थार् का संकेत यह दिखाता है कि सैन्य सफलता को तुरंत राजस्व और क्षेत्रीय नियंत्रण में बदलना आवश्यक था। यही वह बिंदु है जहाँ सामाजिक इतिहास आरम्भ होता हैः पुराने संरक्षण का टूटना, नए अधिकारियों का आगमन, सेवा—अधिकार की अनिश्चितता और पिरवारों की जीवित रहने की रणनीतियाँ।

स्त्री—अनुभव की पुनर्स्थापना इस लेख का सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्ष है। जौहर की स्मृति ने स्त्रियों को इतिहास में एक असाधारण दृश्यता दी, किंतु यह दृश्यता मृत्यु—केंद्रित है। सामाजिक इतिहास पूछता है कि विधवा, पुत्री, माता, बहन, सेविका और आश्रित के रूप में जीवित स्त्री ने परिवार के पुनगठर्न में क्या भूमिका निभाई होगी। उपलब्ध प्रमाण हमें चन्देरी की प्रत्येक स्त्री की कथा नहीं देते' इसिलए इस लेख ने तुलनात्मक शोध से संरचनात्मक प्रश्न निकाले हैं, निश्चित व्यक्तगित कथाएँ नहीं गढ़ीं। इससे एजेंसी और असुरक्षा दोनों को एक साथ देखना संभव होता है—स्त्री संसाधन जुटा सकती थी, पर वही प्रक्रिया पितृवंशीय नियंत्रण, युद्धजिनत हिंसा और आर्थिक निभरर्ता से सीमित भी हो सकती थी।

उत्तराधिकार के प्रश्न से यह स्पष्ट हुआ कि युद्धोत्तर संपत्ति को एकल श्जमीनश की श्रेणी में समझना पर्याप्त नहीं। स्त्रीधन, चल संपत्ति, संयुक्त पारिवारिक संपत्ति, कृषि—अधिकार, राजस्व—संग्रह और सेवा—पद अलग—अलग संस्थागत तर्क रखते थे। किसी पुत्र या विधवा का दावा तभी प्रभावी था जब पिरवार, स्थानीय समाज और नई राज्य—सत्ता उसे मान्यता दें। 1528 में मुगल प्रशासिनक हस्तक्षेप ने इसी मान्यता की संरचना बदली। इसिलए पिरवार का इतिहास राज्य के इतिहास से अलग नहीं' उत्तराधिकार का संकट सत्ता—पिरवतर्न की सूक्ष्म सामाजिक अभिव्यक्ति है।

इसी प्रकार श्पराजित समाजश को पूणर्तः नष्ट मानना भी पर्याप्त नहीं। नगर की आर्थिक उपयोगिता, राजस्व की आवश्यकता और स्थानीय कौशल की अनिवायर्ता पुनर्संयोजन को प्रोत्साहित करती है। कुछ सैनिक समूह तितर—बितर हुए होंगे, कुछ पिरवार अन्य ठिकानों की ओर गए होंगे, आर कुछ स्थानीय मध्यस्थ नए प्रशासन में समाहित हुए होंगे। हिंसा और निरंतरता परस्पर विरोधी नहीं' वे एक ही युद्धोत्तर प्रक्रिया के अलग स्तर हैं। यह निष्कर्ष चन्देरी को प्रारंभिक मुगल राज्य—निर्माण की प्रयोगशाला की तरह देखने की संभावना खोलता है, जहाँ सैन्य कब्जे को स्थानीय समाज के साथ नई बातचीत में बदलना पड़ा।

अंततः स्मृति का प्रश्न इतिहास की नैतिकता से जुड़ता है। जौहर—स्मारक और वीर—कथा स्थानीय पीड़ा तथा सम्मान की दीर्घ स्मृति को संरक्षित करते हैं' उनका महत्व बना रहता है। पर पीएचडी—स्तरीय इतिहासलेखन का दायित्व स्मृति को पुनरावृत्त करना भर नहीं, उसकी संरचना और मौन दोनों को पढ़ना है। जब हम मृतकों के साथ जीवितों, वीरता के साथ आश्रय, दुर्ग के साथ घर, और विजय के साथ उत्तराधिकार को रखते हैं, तब चन्देरी 1528 एक अधिक जिटल ऐतिहासिक पिरदृश्य बनता है। यही श्जौहर के आख्यान से परेश जाने का अर्थ है—जौहर को मिटाना नहीं, बल्कि उसके चारों ओर मौजूद उस समाज को इतिहास में पुनः उपिस्थत करना जिसे नाटकीय आख्यान ने लंबे समय तक छाया में रखा।

भिवष्य के शोध के लिए इस लेख से एक स्पष्ट एजेंडा निकलता है। चन्देरी और निकटवर्ती मालवा—बुंदेलखंड के अभिलेखीय दस्तावेज, फ़ारसी राजस्व सामग्री, शिलालेख, जैन पट्टाविलयाँ, वंशाविलयाँ, मंदिरध्मठ अभिलेख, पारिवारिक बिहयाँ और स्मारकीय अभिलेखों को कालक्रमिक रूप से जोड़ने की आवश्यकता है। विशेषकर 1520.1560 के बीच नामित विधवाओं, नाबालिग उत्तराधिकारियों, स्थानीय राजस्व मध्यस्थों और सेवा—पिरवारों के संकेत खोजे जाएँ तो इस लेख की संरचनात्मक पिरकल्पनाओं को अधिक प्रत्यक्ष आधार मिल सकता है। वतर्मान अध्ययन का योगदान निश्चित संख्या या सनसनीखेज पुनकर्था देना नहीं, बल्कि प्रश्नों की दिशा बदलना हैः युद्ध के बाद समाज कैसे चलता रहा, और उस श्चलते रहनेश में स्त्रियाँ तथा पिरवार कहाँ स्थित थे।

इस अध्ययन से पाँच परस्पर संबंधित निष्कर्ष उभरते हैं। पहला, 1528 को केवल श्युद्धश मानने से उसका सामाजिक काल बहुत छोटा कर दिया जाता है' युद्धोत्तर अस्थिरता पिरवार और संसाधनों में वर्षों

तक जारी रह सकती थी। दूसरा, जौहर स्त्री–अनुभव का एक अत्यंत महत्वपूर्ण परंतु अपूर्ण अंश है' जीवित विधवाओं, पुत्रियों और आश्रित स्त्रियों को विश्लेषण में लौटाना आवश्यक है। तीसरा, उत्तराधिकार केवल निजी विधि का विषय नहीं, नई सत्ता द्वारा दावों की मान्यता का प्रश्न भी था। चौथा, हिंसा के बावजूद नगर और स्थानीय अथव्यवर्स्था के पुनर्सचालन की आवश्यकता ने चयनात्मक सामाजिक निरंतरता उत्पन्न की होगी। पाँचवाँ, 1590 के मुगल लघुचित्र और बीसवीं सदी के जौहर स्मारक जैसे दृश्य स्रोत घटना की अलग–अलग राजनीतिक स्मृतियाँ निर्मित करते हैं। इन निष्कर्षों को प्रत्यक्ष घरेलू अभिलेखों के स्थानापन्न के रूप में नहीं, उपलब्ध साक्ष्य से निर्मित एक परीक्षणयोग्य सामाजिक–ऐतिहासिक मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

संदर्भ सूची

1 अग्रवाल, बी. ;1994द्ध. अपना एक खेतः दक्षिण एशिया में लैंगिकता और भूमि–अधिकार. कैम्ब्रिज यूनिविर्सटी प्रेस.

2 अग्रवाल, बी. ;1998द्ध. विधवाएँ बनाम पुत्रियाँ अथवा विधवाएँ ही पुत्रियाँ? ग्रामीण भारत में संपत्ति, भूमि और आर्थिक सुरक्षा. मॉडर्न एशियन स्टडीज़, 32;1द्धए 1.48प ीजजचेरूध्ध्कवपण्वतहध्10प्1017ध्ै0026749ग्98002935

3 आलम, एम., एवं सुब्रह्मण्यम, एस. (संपा.द्ध ;2000द्ध. मुगल राज्य, 1526.1750. ऑक्सफोर्ड यूनिविर्सटी प्रेस. (मूल कृति 1998 में प्रकाशित)

4 एशर, सी. बी. ;1992द्ध. मुगल भारत की वास्तुकला. कैम्ब्रिज यूनिविर्सटी प्रेस.

5 एशर, सी. बी., एवं टालबॉट, सी. ;2006द्ध. यूरोप से पहले भारत. कैम्ब्रिज यूनिविर्सटी प्रेस.

6 बाबर. ;1922द्ध. बाबरनामाः बाबर के संस्मरण (ए. एस. बेविरज, अनु.द्ध. लूज़ैक एंड कंपनी.

7 बाबर. ;1996द्ध. बाबरनामाः राजकुमार और सम्राट बाबर के संस्मरण (डब्ल्यू. एम. थैकस्टन, अनु.द्ध. स्मिथसोनियन इंस्टिट्यूशन, फ्रीयर गैलरी ऑफ आर्ट एवं आथर्र एम. सैकलर गैलरी.

8 बालाबानिललार, एल. ;2012द्ध. मुगल साम्राज्य में शाही पहचानः आरंभिक आधुनिक दक्षिण और मध्य एशिया में स्मृति और वंशवादी राजनीति. आई. बी. टॉरिस.

9 बटर्न–पेज, जे. ;2008द्ध. भारतीय इस्लामी वास्तुकलाः रूप, प्रकार, स्थल और स्मारक (जी. मिशेल, संपा.द्ध. ब्रिल.

10 बुश, ए. ;2011द्ध. राजाओं की कविताः मुगल भारत का शास्त्रीय हिंदी साहित्य. ऑक्सफोर्ड यूनिविर्सटी प्रेस. ीजजचेरूध्ध्कवपण्वतहध्10प्1093ध्Vबचतवरूिवेवध्9780199765928प्001प्0001

11 चन्द्र, एस. ;2005द्ध. मध्यकालीन भारतः सल्तनत से मुगलों तक, भाग द्वितीय–मुगल साम्राज्य (1526.1748द्ध. हर–आनंद पब्लिकेशंस.

12 किनंघम, ए. ;1871द्ध 1862.63.64.65 के वर्षों में प्रस्तुत चार प्रतिवेदन (भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, खंड 2द्ध. गवनर्मेंट सेंट्रल प्रेस.

13 ईटन, आर. एम. ;2019द्ध. फारसीकृत युग में भारत, 1000.1765. यूनिविर्सटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस.

14 फाइंडली, ई. बी. ;1993द्ध. नूरजहाँः मुगल भारत की सम्राज्ञी. ऑक्सफोर्ड यूनिविर्सटी प्रेस. ीजजचेरूध्ध्कवपण्वतहध्10प्1093ध्Vबचतवरूिवेवध्9780195074888प्001प्0001

15 गोमन्स, जे. जे. एल. ;2002द्ध. मुगल युद्धकलाः भारतीय सीमांत और साम्राज्य के राजमार्ग, 1500.1700. रूटलेज.

16 हबीब, इ. ;1999द्ध. मुगल भारत की कृषक व्यवस्था, 1556.1707 (द्वितीय संशोधित संस्करण). ऑक्सफोर्ड यूनिविर्सटी प्रेस.

17 हार्लन, एल. ;1992द्ध. धर्म और राजपूत स्त्रियाँः समकालीन आख्यानों में संरक्षण की नैतिकता. यूनिविर्सटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस. ीजजचेरूध्ध्कवपण्वतहध्10प्1525ध्9780520913363

18 हार्लन, एल. ;2003द्ध. देवियों के अनुचरः भारतीय वीर–पूजा में लैंगिकता. ऑक्सफोर्ड यूनिविर्सटी प्रेस. ीजजचेरूध्ध्कवपण्वतहध्10प्1093ध्0195154268प्001प्0001

19 हूजा, आर. ;2006द्ध. राजस्थान का इतिहास. रूपा एंड कंपनी.

20 कोल्फ, डी. एच. ए. ;1990द्ध. नौकर, राजपूत और सिपाहीः हिंदुस्तान के सैन्य श्रम–बाज़ार का जातीय–इतिहास, 1450.1850. कैम्ब्रिज यूनिविर्सटी प्रेस.

21 लाल, आर. ;2005द्ध. आरंभिक मुगल संसार में घरेलूपन और सत्ता. कैम्ब्रिज यूनिविर्सटी प्रेस.

22 मिण, एल. ;1998द्ध. विवादित परंपराएँः औपिनवेशिक भारत में सती पर बहस. यूनिविर्सटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस.

23 माथुर, ए. डी. (संपा.द्ध ;2007द्ध. मध्यकालीन हिंदू विधिः स्मृति–उत्तर काल में हिंदू कानून के पिरवतर्नों का अध्ययन. ऑक्सफोर्ड यूनिविर्सटी प्रेस. ीजजचेरूध्ध्कवपण्वतहध्10प्1093ध्Vबचतवरूिवेवध्9780195685589प्001प्0001

24 मिश्र, र. ;1967द्ध. मुगल भारत में स्त्रियाँ, 1526.1748 ई. मुंशीराम मनोहरलाल.

25 मूसवी, एस. ;2015द्ध. मुगल साम्राज्य की अथव्यवर्स्था, लगभग 1595ः एक सांख्यिकीय अध्ययन (द्वितीय संस्करण). ऑक्सफोर्ड यूनिविर्सटी प्रेस. ीजजचेरूध्ध्कवपण्वतहध्10प्1093ध्Vबचतवरूिवेवध्9780199450541प्001प्0001

26 मुखिया, एच. ;2004द्ध. भारत के मुगल. ब्लैकवेल पिब्लशिंग. ीजजचेरूध्ध्कवपण्वतहध्10प्1002ध्9780470758309

27 ओश्हैनलन, आर. ;2007द्ध. राज्य, गृह और देहः अकबर के अधीन इतिहास, लैंगिकता और शाही सेवा. मॉडर्न एशियन स्टडीज़, 41;5द्धए 889.923प ीजजचेरूध्ध्कवपण्वतहध्10प्1017ध्ै0026749ग्06002674

28 पीबॉडी, एन. ;2003द्ध. औपिनवेशिक–पूर्व भारत में हिंदू राजसत्ता और राजव्यवस्था. कैम्ब्रिज यूनिविर्सटी प्रेस.

29 रिचर्ड्स, जे. एफ. ;1993द्ध. मुगल साम्राज्य. कैम्ब्रिज यूनिविर्सटी प्रेस.

30 राहिम, एस. ए. ;1975द्ध. पीरनपुर, चन्देरी के निकट मालवा के सुल्तान अहमद का एक विशिष्ट अभिलेख. एपिग्राफिया इंडिकाः अरबी एवं फारसी पिरशिष्ट, 1970ए 1.8प

31 ग्वालियर राज्य पुरातत्व विभाग. ;1932द्ध. पुरातत्व विभाग की वार्षिक रिपोर्ट, संवत् 1988 ;1931.32द्ध. अलीजाह दरबार प्रेस.

32 शर्मा, जी. एन. ;1962द्ध. मेवाड़ और मुगल सम्राट, 1526.1707 ई. (द्वितीय संस्करण). शिवलाल अग्रवाल.

33 सिंह, एस. ;2019द्ध. मध्यकालीन भारत में विवाह की राजनीतिः राजस्थान में लैंगिकता और गठबंधन. ऑक्सफोर्ड यूनिविर्सटी प्रेस. ीजजचेरूध्ध्कवपण्वतहध्10प्1093ध्वेवध्9780199491452प्001प्0001

34 श्रीनिवासन, आर. ;2007द्ध. एक राजपूत रानी के अनेक जीवनः भारत में वीर अतीत, लगभग 1500.1900. यूनिविर्सटी ऑफ वॉशिंगटन प्रेस.

35 टालबॉट, सी. ;2016द्ध. अंतिम हिंदू सम्राटः पृथ्वीराज चौहान और भारतीय अतीत, 1200.2000. कैम्ब्रिज यूनिविर्सटी प्रेस. ीजजचेरूध्ध्कवपण्वतहध्10प्1017ध्ब्ठव्9781316339893